याद करें बलिदानी सन्तों को और शीश झुकायें

के मुक्ति दिवस मनायें।

तन मन धन की भेंट चढाने से जो ना घबरायें,

के उनकी महिमा गायें, हाँ मुक्ति दिवस मनाये ॥

मानवता की खातिर, कष्ट सहे और खामोश रहे।

दुनिया सुखी हो जाये, ऐसे दिलों में देते जोश रहे।

उनकी सोच को करे नमन और वारी वारी जाये ॥

केमुक्ति दिवस.....

शहनशाह जगतमाता ने, मिशन को दी है उच्चाईयां।

बाबा गुरूबचन सिंह जी ने, कूटकूट भर दी अच्छाईयां।

राजमाता ने सच का परचम, जो दिया उसे लहराये ॥

चाचा प्रताप सिंह ने गुरू अपने को रिझाया है।

ऋषी व्यासदेव जी ने गुरू ने कहा वो कर दिखाया है।

ऐसे विरले सन्तों को हम 'शौक' कभी ना भूलायें ॥

(तर्ज : मिलो ना तुम तो हम घबराये मिलो तो.....)